समकालीन हिंदी कविता में राष्ट्रवाद

शिराजोद्दीन

शोध सारांश

राष्ट्रवाद एक ऐसा भाव एवं विचार है, जो अंतर्विरोधों से घिरा हुआ है। जिसकी अवधारणा समय–समय पर बदलती रहती है। जिसका मुख्य उदाहरण यूरोप से लेकर वर्तमान भारत का परिप्रेक्ष्य है। इस विचारधारा की शुरुआत 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय देशों में हुई। जिसने साम्राज्यवाद, सामंतवाद और उपनिवेशवाद के प्रति जनता की भावनाओं को जगाने का काम किया। भारत में राष्ट्रवाद की शुरुआत एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। जिसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में धार्मिक सुधार आंदोलनों के रूप में हुई थी। इसके बहुत से उदाहरण हैं। समकालीन हिंदी कविताओं में राष्ट्रवाद की परिकल्पना, चुनौतियों तथा बदलती हुई अवधारणाओं को देखा जा सकता है।

बीज शब्द : राष्ट्रवाद, भारतीय परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद के बदलते आयाम, समकालीन हिंदी कविता में राष्ट्रवाद आदि।

शोध प्रविधि : अनुसंधान की विश्लेष्णात्मक पद्धति के साथ–साथ आलोचनात्मक, समीक्षात्मक और आंकड़ों का भी प्रयोग किया गया है।

शोध विस्तार

राष्ट्रवाद एक ऐसा भाव एवं विचार है, जो अंतर्विरोधों से घिरा हुआ है। जिसकी अवधारणा समय–समय पर बदलती रहती है। जिसका उदाहरण यूरोप से लेकर वर्तमान भारत का परिप्रेक्ष्य है। इस विचारधारा की शुरुआत 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय देशों में हुई। जिसने साम्राज्यवाद, सामंतवाद और उपनिवेशवाद के प्रति जनता की भावनाओं को जगाने का काम किया। इसका महत्वपूर्ण उदाहरण सन 1789 में हुई फ्रांस की क्रांति है। फ्रांस की क्रांति ने ही अन्य यूरोपियन देशों एवं राष्ट्रों को जगाने का काम किया। इस क्रांति के परिण

ाम को देखकर दूसरे राष्ट्रों में जिस तरह राष्ट्रीयता एवं चेतना का विकास हुआ वही आगे चलकर 19वीं शताब्दी के आरंभिक काल में राष्ट्रवाद कहलाया। राष्ट्रवाद को समझने से पहले राष्ट्र को समझना उचित होगा। राष्ट्र और राष्ट्रवाद के संदर्भ में प्रो. अपूर्वानंद कहते हैं– ''राष्ट्र एक कल्पना है और जब यह राष्ट्रवाद में तब्दील होती है तो वह बीमारी हो जाती है। यूरोप में हिटलर के राष्ट्रवाद से सावधान रहने की बात कही गई। इससे गांधी, टैगोर, भगत सिंह ने भी सावधान किया। इजरायल का राष्ट्रवाद भी खतरनाक है, उसे हमें आदर्श नहीं मानना चाहिए। इजरायल ने यहूदियों को दूसरे धर्मों से ऊपर रखा। एक समय हम दुनिया को सिखा रहे थे, अब हम इजरायल से सीख रहे हैं।'' वस्तुत: राष्ट्रवाद आधुनिक भाव एवं विचारधारा है। 18वीं सदी में यूरोप में पुनर्जागरण एवं सुधारवादी आंदोलन के परिणाम स्वरूप एक ऐसी विचारध ाारा का उदय हुआ, जिसमें व्यक्ति की निष्ठा का प्रश्न उठाया गया तथा राजा के प्रति निष्ठा से जोड़ दिया गया।

राजाओं ने अपनी शक्ति ऐसे लोगों के इर्द–गिर्द इकट्ठी करने की कोशिश की, जो सामान्य भ ाषा के आधार पर आपस में संगठित थे। अत: यूरोप में राष्ट्रवाद एक राजनीतिक तथ्य है, जो जमींदारी आधारित इंग्लैंड से शुरू हुआ। राष्ट्रवाद को अनेक विद्वानों एवं विचारकों ने विभिन्न रूप से परिभाषित किया है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने कहा था– ''राष्ट्रीयता वर्तमान युग का कोढ़ है।'' जश्न हचिंसन का मत है कि– ''राष्ट्रीयता के विचार की उत्पत्ति इतिहास के जीवन तत्वों से होती है, जिसके आधार पर एक अत्यंत प्रबल एकता की भावना संबंधित मनुष्यों को आपस में बांधती है। एकता की भावना का आधार प्राय: समान भौगोलिक इकाई, समान भाषा तथा समाज संस्कृति हो सकती है। समान तत्वों के प्रति जागरूकता से एकता की भावना उत्पन्न होती है और यह समान उद्देश्य के समान भविष्य से दृढ़ होती है।''

भारत में राष्ट्रवाद की शुरुआत एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। जिसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में धार्मिक सुधार आंदोलनों के रूप में हुई थी। राष्ट्रीय जागरण की प्रक्रिया में कई कारक सहायक सिद्ध हुए थे। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन तथा थियोसा. ॅफिकल सोसायटी जैसी संस्थाओं ने हिंदू धर्म में प्रचलित बुराइयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्शित किया। छुआछूत, बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी समस्याओं के समाधान के लिए जनमत पैदा करने में इन संस्थाओं ने सराहनीय कार्य किया था। भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक कारण महत्वपूर्ण हैं। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में राजनीतिक राष्ट्रवादी चेतना के उभरने तथा संगठित राष्ट्रीय आंदोलन राष्ट्रवाद के उद्भव और विकास का साक्षी है। दरअसल इस दौर में भारत का शिक्षित वर्ग राजनीतिक शिक्षा के प्रसार और देश में राजनीतिक गतिविधियों की शुरुआत करने के लिए राजनीतिक संगठनों

की स्थापना की। परिणाम स्वरूप भारत में पहली राजनीतिक संस्थान के रूप में सन 1838 में कोलकाता में लैंड्होल्डर्स सोसायटी की स्थापना हुई। कार्यागत रूप से बंगाल, बिहार और उड़ीसा के जमींदार वर्ग के हितों की रक्षा इसका मुख्य उद्देश्य था। इसी तरह से सन 1851 में ब्रिटिश इंड्यिन एसोसिएशन, 1852 में मद्रास नेट्वि एसोसिएशन और मुंबई एसोसिएशन की स्थापना हुई। इन संघों द्वारा अंग्रेजी शासन के सामने राजनीतिक एवं प्रशासनिक सुधार से संबंधित मांगे रखी जाती थी। जिससे भारतीयों में राजनीतिक क्रियाकलापों को समझने की दृष्टि विकसित हुई। इसके साथ–साथ राष्ट्रवाद के विकास के आरंभिक चरणों में रेल पथ के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। –सन 1853 में अंग्रेजी शासकों ने भारत में रेल यातायात का निर्माण शुरू किया। एक बार फिर, अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य था भारतीय अर्थव्यवस्था का समुचित शोषण। रेल सेवा विशेशकर कच्चे माल को बंदरगाहों तक पहुंचाने और यातायात किए हुए माल के वितरण में सहायक सिद्ध हुई।''

भारत में रेलवे और सड़कों का निर्माण भले ही अंग्रेजों ने अपने हित की दृष्टि से किया हो, लेकिन भारतीय जनता को वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराने तथा पुराने स्थानिक संकुचित दायरे से निकलकर राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसके माध्यम से प्रगतिशील साहित्य के प्रचार–प्रसार, राजनीतिक दलों व संगठनों के विचार के आदान–प्रदान और आंदोलन के लिए कार्यक्रम निश्चित करने का अवसर मिला। तत्कालीन साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन के खिलाफ समस्त भारतीय जनता में एकता का भाव जगाने में समाचार पत्रों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिसमें ''द इंड्यिन मिरर, दि बंगाली, दि अमृत बाजार पत्रिका, बॉम्बे क्रॉनिकल, दि हिंदू पेट्रिअट, दि मराठा, दि केसरी, दि हिंदू, दि इंदु प्रकाश, दि कोहिनूर इत्यादि अंग्रेजी तथा भारतीय भाषा के समाचार पत्रों ने इस क्षेत्र में बहुत कार्य किए तथा अंग्रेज शासकों द्वारा किए गए कारनामों को प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने प्रतिनिधि सरकार, स्वतंत्रता तथा प्रजा तांत्रिक संस्थाओं को जनता में लोकप्रिय बनाया।''

भारत में राष्ट्रवाद के उदय का एक मुख्य कारण सन 1857 की क्रांति भी है। भले ही यह आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति में विफल हुआ हो, लेकिन पूरे भारत और भारत वासियों में राष्ट्रीयता का भाव जगाया। ''1857 के स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह नि़कला कि ईस्ट इंड्यिा कंपनी के शासन का अंत हो गया और ब्रिटिश सम्राट के संपूर्ण भारत को अंग्रेजी शासन के अधीन ला दिया। इसने संपूर्ण आदेश पर एक समान प्रशासन और कानून लागू किया जिससे देश में भौगोलिक एकता कायम हुई। इसी भौगोलिक एकता से राजनीतिक एकता को बढ़ावा मिला। राजनीतिक एकता से मानसिक एकता को बढ़ावा मिला।''

अत: तत्कालीन भारत में अंग्रेजी शासन तथा साम्राज्यवाद के खिलाफ भारतीय जनता को एकजुट करने के लिए सन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसमें देश के तमाम हिस्सों से लोगों को जोड़ा गया। अंग्रेजों के साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध पूरे देश में एकता का भाव जगाने वाले राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं स्वरूप सन 1947 के आते–आते बदलता गया। राष्ट्रवाद के बदलते हुए स्वरूप के संदर्भ में डॉ. बाबा साहेब अंबेड्कर की बात उल्लेखनीय है। उन्होंने लिखा है– ''ये बात सुनने में भले ही विचित्र लगे, पर एक राष्ट्र बनाम दो राष्ट्र के प्रश्न पर श्री सावरकर और श्री जिन्ना के विचार परस्पर विरोधी होने के बजाय एक दूसरे से पूरी तरह मेल खाते हैं। दोनों ही इस बात को स्वीकार करते हैं, और न केवल स्वीकार करते हैं बल्कि इस बात पर जोर देते हैं कि भारत में दो राष्ट्र हैं: एक मुस्लिम राष्ट्र और एक हिंदू राष्ट्र।– परिणाम स्वरूप सन 1947 में भारत दो भागों में बट गया। एक धार्मिक राष्ट्रवाद के आध ार पर पाकिस्तान और दूसरा धर्मनिरपेक्षता के आधार पर भारत। देश को धर्म के आधार पर दो टुकड़ों में बांटने तथा दो धार्मिक राष्ट्रवाद की बात बिल्कुल एक यूरोपीय चीज थी। दरअसल पूर्व के समय में पूरे यूरोप के देशों में ईसाई राष्ट्रीयता मानकर चलाया जाता था। लेकिन वह ईसाई राष्ट्रीयता नहीं चली।

16वीं सदी तक आते–आते यूरोप के लगभग सभी देशों ने इस धार्मिक राष्ट्रीयता के विरोध में अपने– अपने राष्ट्रों को खड़ा किया था। अपने भूगोल, अपनी संस्कृति और अपने राष्ट्रीय इतिहास के आधार पर यूरोप में एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीयता का विकास हुआ। भारत के संद्र भ में तत्कालीन उच्च वर्गीय नेताओं ने भी धार्मिक आधार पर राष्ट्रवाद के निर्माण के लिए कोशिशें की। प्रो. कांचा अइलैय्या लिखते हैं– ''उपनिवेश विरोधी संघर्ष के दौरान भारत के उच्च वर्गीय नेताओं ने जानबूझकर भारतीय राष्ट्रवाद को हिंदू राष्ट्रवाद के प्रतिनिधि रूप में पेश किया। स्वाभाविक ही था कि उन्होंने इस राष्ट्रवाद को उन हिंदू ग्रंथों में तलाश किया जो दलित बहुजन को आध्यात्मिक रूप में अशुद्ध और ऐतिहासिक रूप में मूर्ख करार देती थीं।''

भारतीय समाज में हजारों सालों से चली आ रही वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत समाज को विभाि जत कर, दलित समाज के लोगों का दमन, शोषण व अत्याचार किया गया। एक राष्ट्र में रहते हुए उन्हें तमाम दमनकारी नीतियों का सामना करना पड़ा। इसलिए डॉ. बाबा साहेब अम्बेड्कर का मानना था– ''हजारों जातियों में विभाजित लोग कैसे एक राष्ट्र हो सकते हैं? जितनी जल्दी हम यह समझ लें कि इस शब्द के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अर्थ में हम अब तक राष्ट्र नहीं बन पाए हैं, हमारे लिए उतना ही अच्छा होगा क्योंकि तभी हम एक राष्ट्र बनाने की आवश्यकता को ठीक से समझ सकेंगे।'' जब हम भारतीय परंपरा और संस्कृति के संदर्भ में राष्ट्रवाद की कोई अवधारणा तैयार करते हैं, तो हमें इस सवाल से सामना करना ही पड़ेगा

कि हम निरंकुश राज्यसत्ताओं की संस्कृति के संदर्भ में यह अवधारणा तैयार कर रहे हैं या साधारण लोक संस्कृति के संदर्भ में। वर्तमान समय में सांप्रदायिक ताकतें जिस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को उछाल रही है, वह कूपमंडूकता, अलगाववाद और अंध राष्ट्रवाद के तत्वों को उत्ते . जित करने वाली निरंकुश राज्य सताओं की संस्कृति है। दरअसल सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों का लक्ष्य है– हिंदू राष्ट्र की स्थापना। इसके तत्वों को आगे बढ़ाने में आर.एस.एस. की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए प्रो. राम पुनियानी कहते हैं– ''आर एस एस की राजनीतिक विचारध ारा के मूल में है हिंदुत्व या हिंदू राष्ट्र। – राष्ट्रवाद चाहे भारतीय हो या हिंदू हो या मुस्लिम, राष्ट्रवाद के अपने खतरे भी हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रवाद के नाम पर उन्माद फैलाना बड़ा आसान काम बन चुका है। आज राष्ट्रवाद के नाम पर जो डर और उन्माद का माहौल पैदा किया गया है, वो हमें राष्ट्रवाद के खतरे से रूबरू कराता है। इसीलिए रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था– ''मनुष्य ने बेसुध कर देने वाली जितनी भी परिकल्पनाएं ईजाद की हैं, 'राष्ट्रवाद' उनमें सबसे प्रबल है। इसकी गंध (फ्यूमस) से प्रभावित होकर सारे लोग बिना इसका नैतिक दायित्व जाने, एक जहरीले, स्वार्थ परक, सुनियोजित कार्यक्रम से जुड़ सकते हैं। अगर इसको लागू करने वालों को इससे अवगत कराया जाए तो वे खतरनाक तरीके से इसका प्रतिरोध करते हैं।'' सच्चे रूप में राष्ट्रवाद का निर्माण करना है तो बाबा साहेब अम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान के मूल्यों को कायम करने की आवश्यकता है। दरअसल लोकतंत्र, भारत का संघीय ढांचा, धर्म निरपेक्षता, सभी धर्मों की समानता, नागरिकों के मौलिक अधिकार और राज्यों की स्वायत्तता ये तमाम चीजें एक बेहतर समाज और राष्ट्र को बनाने में मुख्य आधार हैं।

समकालीन हिंदी कविताओं में राष्ट्रवाद की परिकल्पना, चुनौतियों तथा बदलती हुई अवध ारणाओं को देखा जा सकता है। समकालीन कवि वर्तमान भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद के बदलते स्वरूप, राष्ट्रवाद की आड़ में राजनीतिक गतिविधि और आम जनता के जीवन में आए बदलाव पर अपने विचारों को स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त करने की चेश्टा की है। जिसमें प्रमुख रुप से ज्ञानेंद्रपति, मंगलेश डबराल, राजेश जाशी, अनामिका आदि की कविताएं प्रमुख हैं। वर्तमान समय के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में देशभक्ति राजनेताओं की कठपुतली बन चुकी है। अपनी राजनीतिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए वे लोग राश्ट्रवाद जैसे एकता के सिद्ध ांत को अपने अनुरूप उपयोग करने की कोशिश करते हैं। राजेश जोशी की 'यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' कविता देश भक्ति तथा राष्ट्रवाद के खतरे को अभिव्यक्त करती है। जिसमें कवि कहता है–

''सबसे खतरनाक है सपनों का बिक जाना
महानुभवो वो कुछ भी बेंच सकते हैं

क्रांतिकारी गीतों को बना सकते हैं पॉप सॉन्ग

बेंच सकते हैं एक साथ वंदे मातरम और कोलगेट की मुस्कान

हानिकारक है संविधान की समीक्षा

इतिहास परिषद पर मंडराता खतरा

और सबसे हानिकारक है उनका राष्ट्रवाद।''

भारतीय समाज में राजनीति की विशेषता रही है। राजनीति के उतार–चढ़ाव के यथार्थ को चित्रित करने में समकालीन हिंदी कविता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसीलिए समकालीन कवि मंगलेश डबराल, 'तानाशाह कहता है' कविता में आम जनता को झूठे आश्वासन तथा सपने दिखाकर उन्हें मूर्ख बनाने की बात को स्पष्ट करते हैं।

''तानाशाह चाहता है

तुम सिर्फ उसके दुख के बारे में सोचो

और कुछ करना ही है

तो इतना करो

कि जब वह मरने लगे

तो खोज लाओ एक नया तानाशाह।''

समकालीन कवि ज्ञानेंद्रपति व्यंग्यात्मक रूप में नेताओं पर कटाक्ष करते हैं। वर्तमान समय में नेताओं ने राष्ट्रवादी भावना एवं देशभक्ति को संकुचित बना दिया है। आज के समय में यदि कोई व्यक्ति सरकार की आलोचना करता है या नेताओं के विचारों पर असहमति जताता है तो उसकी राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति पर शक किया जाता है। सत्ता में बैठे लोग ऐसे ही संवेदनशील भाव को ठेस पहुंचाते हैं। सरकार का विरोध करने वालों को देश का विरोध करना बताते हैं। देशभक्ति का प्रमाण पत्र बांटते हैं। सरकार का विरोध करना, देशा का विरोध करना नहीं हैं, बल्कि लोकतांत्रिक अधिकार है। 'पांव जिन्हें पखारे सागर' कविता में कवि कहता है–

''वे सपूत है सच्चे भारत माता के

सरकार बने जो बैठे हैं

फेनकोमल शय्याओं पर लेटे हैं

दुखड़े–दारिद दूर करेंगे दुखियारी के

बेकल बेअकल कवियों से अपील सरकारी हितकारी:''

राजनीतिक व्यवस्था में जो लोग देश प्रेम की बात करते हैं, वे असल में अपनी राजनीति की रो . टियां सेंकना चाहते हैं। ऐसे लोगों की विचारधारा का पर्दाफाश समकालीन कवयित्री अनामिका की 'देश प्रेम' कविता करती है। जिसमें कवयित्री को देश प्रेम एक भारी भरकम नाम लगता है। इसीलिए वे कहती हैं–

''ऐसे ही छुट्टे पैसे–सा
छुपा हुआ मेरी भी कोने–अंतरों में
मुझे मिला वह
जिसका भारी–भरकम एक नाम है देश प्रेम!''

अत: समकालीन हिंदी कविताएं देश भक्ति या राष्ट्रवाद के नाम पर होने वाले छलावे को अभि: ाव्यक्त करती हैं। वर्तमान समय की राजनीतिक व्यवस्था में नेता इन तमाम बिंदुओं को लेकर अपनी राजनीतिक गतिविधियां तथा सत्ता पाने की होड़ में आगे बढ़ रहे है। राष्ट्रवाद एक संवे. दनशील भाव है, जिसके तहत देश के नागरिकों में एकता, भाईचारे तथा समानता की चेतना पैदा होती है। समकालीन समय की विडंबना यह है कि इसका दुरुपयोग भी होता हुआ नजर आता है। इसलिए समकालीन कवि इस भाव के आड़ में होने वाली राजनीतिक गतिविधियों का यथार्थवादी चित्रण करने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

https://www-google-com/amp/s/aajtak-intoday-in/lite/story/sahitya&aa-jtak&rashtra&aur&dharm&nation&nationalism&religion&de-bate&1&1041318-html

अनामिका, दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2007, पृ. 134

कांचा अइलैय्या, हिंदुत्व मुक्त भारत, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.xxviii

जॉन हचिंसन, एंथनी डी स्मिथ, नेशनलिज्म, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, संस्करण 1994, पृ.167–168

बाबासाहेब अंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, खंड 15, डॉ. अंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और

अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, दसवें संस्करण 2019, पृ.131

बी.एल ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चांद पब्लिशिंग, नई दिल्ली, संस्करण 2006, पृ.291

मंगलेश ड्बराल , कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ.38

राजेश जोशी, चांद की वर्तनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2006, पृ.91

राम पुनियानी, अंबेड्कर और हिंदुत्व राजनीति, फारोस मीड्या पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ.18

शम्सुल इस्लाम, भारत–विभाजन विरोधी मुसलमान, फारोस मीड्या पब्लिशिंग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019, पृ.53

शिवानी किंकर चौबे, भारत में उपनिवेशवाद, स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2000, पृ.64

सं. डॉ.सत्या एम. राय, भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2009, पृ.220

सं. राजकिशोर, हिंदुत्व की राजनीति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृ.130

सं.रविकांत, आज के आईने में राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2018, पृ.बैक कवर

ज्ञानेंद्रपति, संशयात्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2004, पृ.58